एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 05 (सितंबर-अक्टूबर, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

सतत कटाई: टिकाऊ बागवानी उत्पादन के लिए जैविक खेती का समग्र दृष्टिकोण

(हरि बक्श[1], यशार्थ मिश्रा[2], शिखा जैन[3] एवं *गौरव गुप्ता[4])

[1]सहायक प्राध्यापक, बागवानी विभाग, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय जौनपुर, उत्तर प्रदेश

[2]एम.एससी. (हॉर्ट) पोस्ट हार्वेस्ट मैनेजमेंट, शुआट्स, नैनी, प्रयागराज

[3]वनस्पति विज्ञान विभाग, एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह

[4]पीएच.डी. विद्वान, फल विज्ञान, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर

*संवादी लेखक का ईमेल पता: gauravkawardha@gmail.com

कृषि में एक महत्वपूर्ण बदलाव हो रहा है क्योंकि लोग यह समझने लगे हैं कि मानवीय गतिविधियों का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ता है। इस बदलाव में जैविक खेती एक टिकाऊ मॉडल के रूप में उभरती है, जो पारंपरिक तकनीकों से आगे बढ़कर फल उत्पादन के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करती है। आइए हम टिकाऊ कृषि के हरे-भरे खेतों की यात्रा करें, जहां नैतिक कृषि पद्धतियों की नींव वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए लाभदायक साबित होती है।

भारत की कृषि समुदाय के लिए जैविक खेती का विचार नया नहीं है क्योंकि यह देश के वर्षा-आधारित, आदिवासी, पर्वतीय और पहाड़ी क्षेत्रों में सफलतापूर्वक अपनाई जाती रही है। आर्थिक महत्व वाले वन उत्पाद, जैसे जड़ी-बूटियाँ और औषधीय पौधे, स्वाभाविक रूप से इस श्रेणी में आते हैं। भारत दुनिया का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश है और बढ़ती जनसंख्या के साथ, उपजाऊ भूमि का संसाधन दिन-प्रतिदिन सिकुड़ता जा रहा है। इसलिए, बढ़ती आबादी की खाद्य, वस्त्र, ईंधन, चारा और अन्य जरूरतों को पूरा करने के लिए कृषि भूमि की उत्पादकता और मृदा स्वास्थ्य में सुधार आवश्यक है। हरित क्रांति प्रौद्योगिकियों, जैसे सिंथेटिक रसायनों का अधिक उपयोग, उच्च उपज देने वाली फसलों की किस्मों को अपनाना, सिंचाई की संभावनाओं का अधिक दोहन आदि ने उत्पादन को कई मामलों में बढ़ाया है। इसलिए, कृषि उत्पादन, मृदा स्वास्थ्य और एक स्वस्थ पर्यावरण को बनाए रखने के लिए एक वैकल्पिक कृषि प्रणाली, जैसे जैविक खेती को अपनाना आवश्यक है।

जैविक खेती एक समग्र और टिकाऊ दृष्टिकोण है जो पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता और मृदा स्वास्थ्य को प्राथमिकता देती है। पारंपरिक कृषि विधियों के विपरीत, जो अक्सर सिंथेटिक रसायनों और आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों पर निर्भर होती हैं, जैविक खेती प्राकृतिक प्रक्रियाओं के साथ मिलकर फसलों की खेती करने का प्रयास करती है। जैविक खेती के निम्नलिखित प्रमुख पहलू इसे टिकाऊ बागवानी फसल उत्पादन की दिशा में एक समग्र दृष्टिकोण बनाते हैं:

1. **मृदा स्वास्थ्य:** खाद और जैविक पदार्थ: जैविक किसान मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने के लिए खाद, हरी खाद और जैविक पदार्थों का उपयोग करते हैं। ये प्रथाएँ मिट्टी की संरचना, जल धारण क्षमता और पोषक तत्व उपलब्धता को बढ़ाती हैं।

   फसल चक्रण: फसलों को चक्रीय रूप से बोना मिट्टी से जुड़ी बीमारियों और कीटों को रोकने में मदद करता है और मिट्टी की उर्वरता में सुधार करता है।

2. **जैव विविधता:** बहुफसली प्रणाली: जैविक खेतों में अक्सर विभिन्न फसलों को एक साथ उगाया जाता है, जो जैव विविधता को बढ़ावा देती है, लाभकारी कीड़ों को आकर्षित करती है और कीटों और बीमारियों के फैलने की संभावना को कम करती है।
   आवास संरक्षण: जैविक किसान प्राकृतिक आवासों को संरक्षित करने के लिए भूमि का कुछ हिस्सा आवंटित करते हैं, जैसे हेज़रो और वन्यजीव गलियारे बनाना।
3. **कीट और रोग प्रबंधन:** जैविक नियंत्रण: जैविक किसान कीटों और बीमारियों को नियंत्रित करने के लिए प्राकृतिक शिकारियों, परजीवियों और लाभकारी सूक्ष्मजीवों का उपयोग करते हैं, जिससे सिंथेटिक कीटनाशकों की निर्भरता कम होती है।
   साथी पौधों का रोपण: कुछ पौधे संयोजन कीटों को हतोत्साहित कर सकते हैं या पड़ोसी पौधों की वृद्धि को बढ़ावा दे सकते हैं।
4. **सिंथेटिक रसायनों से बचाव:** कोई सिंथेटिक कीटनाशक या उर्वरक नहीं: जैविक खेती सिंथेटिक कीटनाशकों और उर्वरकों के उपयोग से बचती है, जिससे मिट्टी और जल प्रदूषण को रोका जा सकता है और गैर-लक्षित जीवों को नुकसान कम होता है।
5. **जल संरक्षण:** ड्रिप सिंचाई और मल्चिंग: जैविक खेती में जल का कुशल उपयोग महत्वपूर्ण है। ड्रिप सिंचाई और मल्चिंग जैसी तकनीकों का उपयोग जल संरक्षण के लिए किया जाता है।
6. **आनुवंशिक विविधता:** पारंपरिक किस्में: जैविक किसान आमतौर पर पारंपरिक और खुले-परागण वाली किस्मों को प्राथमिकता देते हैं, जो आनुवंशिक विविधता को बढ़ावा देती हैं।
7. **समुदाय और सामाजिक कल्याण:** स्थानीय और टिकाऊ प्रथाएँ: जैविक खेती स्थानीय और टिकाऊ कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देती है जो स्थानीय समुदायों के कल्याण का समर्थन करती हैं।
8. **प्रमाणन मानक:** जैविक प्रमाणन: जैविक खेती के रूप में मान्यता प्राप्त करने के लिए खेतों को विशेष मानकों का पालन करना पड़ता है।

जैविक खेती के घटक

जैविक खेती को सबसे अच्छा इस रूप में देखा जा सकता है जहां सभी तत्व जैसे खनिज, जैविक पदार्थ, सूक्ष्मजीव, कीट, पौधे, और जानवर एक संगठित और आत्मनिर्भर इकाई के रूप में कार्य करते हैं। जैविक खेती एक समग्र उत्पादन प्रणाली है।

1. जैविक खाद: जैविक बाय-प्रोडक्ट को जैविक रूप से संशोधित करके मिट्टी में मिलाने योग्य उत्पाद बनाने की प्रक्रिया को कम्पोस्टिंग कहा जाता है।
2. जैव उर्वरक: जैव उर्वरक में सूक्ष्मजीव होते हैं, जो मिट्टी या पौधे के साथ मिलकर पौधे की वृद्धि को बढ़ावा देते हैं।
3. जैव कीटनाशक: जैविक कीटनाशक प्राकृतिक दुश्मनों या यौगिकों की नकल करते हैं और कीटों को नियंत्रित करने के लिए उपयोग किए जाते हैं।

निष्कर्ष

जैविक खेती एक समग्र और टिकाऊ दृष्टिकोण है जो मृदा स्वास्थ्य, जैव विविधता, प्राकृतिक कीट प्रबंधन और सामुदायिक कल्याण को प्राथमिकता देती है। यह विधि दीर्घकालिक कृषि क्षमता को बनाए रखते हुए पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभावों को कम करने का प्रयास करती है।